धम्मपद

Path of Dhamma

सम्पादकः

आचार्यः राधावल्लभः त्रिपाठी

कुलपतिः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

धम्मपद

Path of Dhamma

सम्पादकः

आचार्यः राधावल्लभः त्रिपाठी

कुलपतिः

सहसम्पादकाः

डा. सोमेशकुमारमिश्रः

डा. शुक्ला मुखर्जी

डा. अवधेशकुमारचौबे

श्रीप्रफुल्लगडपालः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

धम्मपद

Path of Dhamma-21

अप्पमादो अमतपदं,
पमादो मच्चुनो पदं।
अप्पमत्ता न मीयन्ति,
ये पमत्ता यथा मता॥ (2/1)

अप्रमाद (साधना में त्रुटि का अभाव)
अमृत का मार्ग है, प्रमाद मृत्यु का
मार्ग है। प्रमाद न करने वाले
(वस्तुतः बार बार जन्म लेने के लिए)
मरते नहीं और जो प्रमाद करने वाले हैं,
वे मृत समान हैं।

Earnestness is the path of immortality (*Nirvāṇa*), thoughtlessness the path of death. Those who are in earnest do not die, those who are thoughtless are as already dead.

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,

नवदेहली-110058